Class — T.D.C. Part III
Paper — V धर्म-दर्शन (Philosophy of Religion)

डॉ० पूनम शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
आर० एन० कॉलेज

Topic — प्रयोजन मूलक युक्ति (Teleological Argument)
(ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रमाण)
(Proof for the existence of God)

## प्रयोजन मूलक युक्ति (Teleological Argument)

ईश्वर के समर्थन में दी गयी युक्तियों में यह सबसे लोकप्रिय एवं प्राचीन युक्ति है। इस युक्ति में ईश्वरीय सत्ता को विश्व में व्याप्त प्रयोजन के आधार पर प्रमाणित करने का प्रयास किया गया है। 'Teleological' शब्द की व्युत्पत्ति ग्रीक शब्द 'Teleos' से हुई है जिसका अर्थ 'प्रयोजन' होता है। कुछ विचारकों ने यह माना है कि विश्व की प्रत्येक वस्तु का कोई-न-कोई प्रयोजन है तथा उसमें एक निश्चित व्यवस्था है। यह व्यवस्था विश्व के उद्देश्य को सूचित करती है। विश्व में व्याप्त यह व्यवस्था दो प्रकार की है — (1) व्यापक एवं (2) विशिष्ट।

(1) व्यापक व्यवस्था → इसके अन्तर्गत प्रकृति का प्रत्येक कार्य एक निश्चित नियम के अधीन होता है। जैसे — सूर्य का प्रातः में पूर्व दिशा में उदय होना एवं सायंकाल में पश्चिम दिशा में अस्त हो जाना, फूलों के रंगों का

एक निश्चित क्रम में होना, एक ऋतु के बाद दूसरे ऋतु का आगमन अनियन्त्रित न होकर निश्चित एवं क्रमबद्ध होना आदि। इसीप्रकार मास में एक ही दिन चन्द्र का पूर्ण होना एवं क्रमशः उनका घटना और लुप्त हो जाना विश्व में निहित व्यवस्था का सूचक है। इसी व्यवस्था के आधार पर ज्योतिषशास्त्र में सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण की निश्चित भविष्यवाणियाँ की जाती हैं।

(2) विशिष्ट व्यवस्था — इस व्यवस्था के अन्तर्गत प्रकृति की सामंजस्य-शक्ति दिखलायी पड़ती है। जैसे — किसी अंग के कट जाने पर उसका स्वाभाविक रूप से ठीक हो जाना, बीमार होने पर प्रकृति के द्वारा स्वतः ठीक हो जाना आदि। विश्व की इस अभियोजन-शक्ति की अभिव्यक्ति चयन (Selection) एवं बहिष्कार (Elimination) के द्वारा होती है। डार्विन के विकासवाद के अनुसार प्रकृति स्वतः अनुकूल का चयन एवं प्रतिकूल का बहिष्कार करती है।

इससे सिद्ध होता है कि प्रकृति में एक निश्चित व्यवस्था है जिसका कोई-न-कोई उद्देश्य है और इस उद्देश्य के पीछे किसी बुद्धिसम्पन्न व्यक्तित्व का योगदान है। विश्व का यह प्रयोजनकर्ता ईश्वर है।

इस युक्ति का समर्थन अनेक दार्शनिकों ने किया है तथा इसके पक्ष में अनेक तर्क भी प्रस्तुत किये हैं। इन विचारकों में प्लेटो, बेकन आदि प्रमुख हैं। सन्त थॉमस अक्वाइनस ने ईश्वर को प्रमाणित करने के लिए 5 प्रकार के तर्क दिये हैं, उसमें अन्तिम तर्क (या प्रमाण) प्रयोजनमूलक है। उनके अनुसार विश्व को देखने से पता चलता है कि विश्व की प्रत्येक वस्तु का

एक निश्चित उद्देश्य है, किन्तु यह व्यक्तिगत उद्देश्य नहीं हो सकता क्योंकि वस्तुएँ बुद्धिगम्य नहीं होती। यह स्थिति सिद्ध करती है कि विश्व का प्रयोजनकर्त्ता या निर्देशक कोई एक बुद्धिमान चेतन सत्ता है जो इन वस्तुओं के साध्यरूप से प्रयोजन की पूर्ति करता है। यह प्रयोजनकर्त्ता या निर्देशक ईश्वर है। जिसप्रकार तीर चलाने वाला तीर की दिशा को निर्धारित करता है, वैसे-ही ईश्वर संसार की निर्जीव वस्तुओं की दिशा का निर्देशक है।

आधुनिक युग में इसकी सबसे प्रसिद्ध व्याख्या विलियम पेली के द्वारा की गयी है। उन्होंने अपनी पुस्तक "Natural Theology" में ईश्वर के प्रयोजनात्मक स्वरूप को सिद्ध करने का प्रयास किया है। उन्होंने कहा है कि किसी निर्जन स्थान में घड़ी को रखा हुआ देखकर यह नहीं कहा जा सकता है कि प्राकृतिक शक्तियों के संयोग से वह स्वतः बन गयी है। इसके कल-पुर्जों की व्यवस्था को देखकर ऐसा लगता है कि किसी घड़ीसाज ने समय देखने के प्रयोजन से इसकी रचना की है। इसीप्रकार नियमबद्ध एवं प्रयोजन-युक्त इस विश्व की व्यवस्था को देखकर कुशल रचनाकार या ईश्वर का संकेत मिलता है। सूर्य के चारो ओर ग्रहों एवं उपग्रहों का घूमना, ऋतु-परिवर्तन, मानव शरीर के विविध अंग (जैसे — मस्तिष्क, आँखें आदि), दिन-रात की शृंखला — ये सभी व्यवस्थाएँ ईश्वर (रचनाकार) की सत्ता सिद्ध करती हैं।

मार्टिन्यू ने भी प्रयोजनात्मक युक्ति के द्वारा ईश्वर को सिद्ध करने का प्रयास किया है। उन्होंने विश्व में व्याप्त 'अभियोजन शक्ति' की व्याख्या करते हुए कहा है कि यह अद्भुत एवं विलक्षण है। प्रकृति में एक विशेष सामंजस्य-शक्ति है ~~जिसके~~ जिसकी अभिव्यक्ति

(क्रमशः)